प्रेमचंद और जयशंकर प्रसाद की कहानियों में भाषा शैली का तुलनात्मक अध्ययन

अजय राज गौर[1], मधु अग्रवाल[2]

हिंदी विभाग

[1,2]श्री वेन्केटेश्वर विश्वविद्यालय, गजरौला, यू.पी.

सार

प्रेमचंद और जयशंकर प्रसाद की कहानियों में प्रयुक्त संवादात्मकता का सूक्ष्म विश्लेषण करने से पता चलता हैं कि हिन्दी कहानी–साहित्य को कथ्य और शिल्प की दृष्टि से उत्तरोत्तर विकसित करने में दोनों रचनाकारों का योगदान अन्यतम है। इन दोनों कहानीकारों ने अपनी कहानियों में संवाद–तत्व का बहुआयामी प्रयोग कर कहानी–साहित्य को एक अलग पहचान दिया है। लेकिन कहानी के क्षेत्र में दोनों ने भिन्न–भिन्न प्रवृत्तियों को ही अपनाया है। प्रेमचंद ने अपनी कहानियों में यथार्थमूलक दृष्टि को अपनाया है तो प्रसादजी ने अपने निजी व्यक्तित्व के अनुरूप भावमूलक दृष्टि का व्यापक प्रयोग किया है। इन दोनों प्रवृत्तियों का अनुकरण और प्रभाव पूरे विकास युग पर परिलक्षित होता है। लेकिन तुलनात्मक दृष्टि से विचार करने पर प्रेमचंद की यथार्थवादी परम्परा को अधिक कहानीकारों ने स्वीकार किया है। फिर भी व्यापक रूप में विचार करने पर हिन्दी कहानी यात्रा के वास्तविक विकास में इन दो महान प्रतिभाओं का स्थान सर्वोपरि ही है। इस अध्याय में प्रेमचंद और प्रसाद कीकहानियों में प्रयुक्त संवाद–तत्व की भाषापरक, शैलीपरक, कथ्यपरक और अन्य विधायी प्रभाव की दृष्टि से तुलनात्मक अध्ययन करने का प्रयास किया गया है[1] ।

प्रस्तावना

''कहानी की भाषा बहुत ही सरल और सुबोध होनी चाहिए। उपन्यास तो वे लोग पढ़ते हैं जिनके पास रुपया है और समय भी..... आख्यायिका साधारण जनता के लिए लिखी जाती है, जिनके पास न धन है न समय। यहाँ तो सरलता में सरसता पैदा कीजिए, यही कमाल है। कहानी की भाषा के संबन्ध में साधारण जनता के कथाकार प्रेमचंद का यह विचार उनकी कहानियों में प्रयुक्त भाषा में स्पष्ट दिखाई देता है। उनके अनुसार कहानी साहित्य को जीवनोपयोगी बनाने के लिए तथा कहानी में अभिव्यक्त विचारों को स्पष्टता प्रदान करने के लिए कहानी की भाषा सरल, सुबोध और प्रेषणीय होना बहुत जरूरी है[2]। कहने का मतलब यह है कि कहानी की भाषा आकर्षक तथा उपयुक्त होनी चाहिए। इस बात का समर्थन देते हुए 'कुछ विचार ' में प्रेमचंद लिखते हैं ''हम कहानी ऐसी चाहते हैं कि वह थोड़े से थोड़े शब्दों में कही जाय, उसमें एक वाक्य, एक शब्द भी अनावश्यक न आने पाये, उसका पहला ही वाक्य मन को आकर्षित कर ले। उसमें कुछ चटपटापन हो, कुछ ताजगी हो।''

प्रेमचंद और जयशंकर प्रसाद की कहानियों का भाषापरक अन्तर

भाषा कहानी शिल्प का सर्वाधिक महत्वपूर्ण उपकरण है। कहानीकार भाषा के माध्यम से ही अपने विचारों एवं भावों और उद्देश्य को पाठकों के सामने प्रकट करते हैं। पाठकों और लेखक के बीच के संप्रेषण की कड़ी 'भाषा' है। इसलिए कहानीकार को प्रयुक्त भाषा पर अधिक ध्यान

रखनी चाहिए। भाषा के अनुचित एवं नीरस प्रयोग से पाठकों के मन में रचना के प्रति अरुचि पैदा होती है। कहने का तात्पर्य यह है कि कहानी की सफलता या असफलता, प्रयुक्त भाषाई कौशल पर ही निर्भर रहती है। क्योंकि भाषा के माध्यम से ही अन्य सभी तत्वों का स्पष्टीकरण संभव होता है। इसलिए पात्रानुकूलता पर ज्यादा ध्यान रखनी चाहिए। भाषा शिल्प का निर्माण प्रत्येक कहानीकार अपनी अनुभूति के स्तर पर करता है। यही कारण है कि कहानियों के अभिव्यक्ति पक्ष में भिन्नता पायी जाती है[3]।

किसान–मजदूर की भाषा

प्रेमचंद की कहानियों में आनेवाले अशिक्षित सर्वहारा जन–समुदाय के लोगों की भाषा में ग्रामीण शब्दों का प्रयोग बहुत अधिक हुआ है। 'जुर्माना', 'सद्गति', 'पूस की रात' आदि कहानियों में प्रयुक्त भाषा इसका स्पष्ट उदाहरण हैं।

'जुर्माना' की अलारक्खी खजांची से कहते हैं – ''कुछ जरिमाना नहीं है?'' जुर्माना के बदले 'जरिमाना' का प्रयोग करके प्रेमचंद ने अलारक्खी की अनपढ़, गंवारू जीवन शैली की ओर संकेत किया है। 'सद्गति ' की झुरिया बोलती हैं, ''देखते नहीं, कितने नेम–धरम से रहते हैं।''यहाँ भी झुरिया के शब्द उसके सामान्य जीवन स्तर की ओर संकेत देते हैं। उच्च – मध्यवर्गीय पात्रों की भाषा आर्थिक दृष्टि से संपन्न पात्रों की भाषा में स्वामित्व या रोब दिखाने लायक कटु शब्दों का प्रयोग देखने को मिलता है[4]। 'सभ्यता का रहस्य ' नामक कहानी में राय रतन किशोर के शब्दों में जो कर्कशता एवं अधिकार भाव है, वह सर्वथा उसके उच्च चरित्र की सफल अभिव्यक्ति देता है। घमंडी को डाँटेते हुए राय साहब कहते हैं ''जब हम तुम्हें रात–दिन के लिए रखे हुए हैं, तो तुम घर पर क्यों रहे? कल के पैसे कट जाएँगे। .....बक बक मत करो।..... दो रुपये जुरमाना।''

जयशंकर प्रसाद की कहानियों में प्रयुक्त भाषा की विशेषताएँ

भारतीय सांस्कृतिक चेतना के कहानीकार जयशंकर प्रसाद मूलतः कवि और बाद में नाटककार होने के कारण उनकी कहानियाँ, कहानियाँ होने के साथ–साथ काव्य और नाटक की जैसी प्रतीति देती है। कहानी साहित्य प्रसादजी के लिए मूलकेन्द्रित विधा तो नहीं था जैसे वह प्रेमचंद के लिए थी। प्रसादजी छायावादी संस्कारों के कवि होने के कारण उनकी कहानियों की सृजनभूमि काव्यात्मकता पर टिकी हुई है। उनकी कहानियों का शैल्पिक सौन्दर्य उनका अपना बनाया हुआ एक अलग संसार है। ऐसा एक संसार गढ़ने में उनकी भावमूलक भाषा का हाथ सर्वप्रथम ही है। क्योंकि प्रसादजी का भाषा पर असामान्य अधिकार था। उनकी इस भाषा कौशल को देखकर 'अज्ञेय का कथा साहित्य ' के लेखक बताते हैं, ''भाषा–शैली की दृष्टि से प्रसाद अत्यंत परिष्कृत एवं परिनिष्ठित भाषा–लेखक है[5]।

प्रेमचंद और जयशंकर प्रसाद की कहानियों की कथन शैली परक अन्तर

किसी भी बात को कहने या लिखने के विशेष ढंग या तरीके को शैली कहते हैं। साहित्य की सभी विधाओं में लेखन को प्रभावशाली बनाने के लिए विभिन्न शैलियों का सफल प्रयोग साहित्यकार करते हैं जो उनकी सृजनात्मक कुशलता का परिचायक है। हिन्दी कहानियों में तो विभिन्न शैलियाँ पायी जाती हैं। वस्तु और भाव के अनुरूप कहानीकार विभिन्न शैलियों को अपनाते हैं। प्रयुक्त शैली की उपयुक्तता के अभाव में रचना अपरिपक्व या अव्यवस्थित हो जायगी। कहानी की शैली केवल भाषा तक ही सीमित नहीं है, बल्कि समस्त रचना प्रक्रिया के साधनों तक इसका एक व्यापक धरातल है[6]। एक तरह से देखने से

कहानी में प्रयुक्त शैली, कहानी शिल्प का एक छोटा रूप ही है।

प्रेमचंद की कहानियों में प्रयुक्त विभिन्न शैलियाँ

प्रेमचंद ने अपने विराट कहानी–साहित्य में कहानी कला में प्रयुक्त सभी शैलियों का सफल प्रयोग किया है। मुख्य रूप से उनकी कहानियों में आत्मकथात्मक शैली, नाटकीय शैली, संवादात्मक शैली, लघुकथात्मक शैली, भाषणशैली, मनोविश्लेषणात्मक शैली, पत्रात्मक शैली आदि का प्रयोग दर्शनीय है। इन सभी के मूल में उनकी अनेकरूपिणी भाषाई कुशलता का हाथ सर्वप्रथम है।

आत्मकथात्मक शैली:प्रेमचंद की आत्मकथात्मक शैली में लिखी गई कहानियों में 'यह मेरी मातृभूमि है', 'हार की जीत', 'शाप', 'बडे घर की बेटी', 'नशा, 'कजाकी', 'विमाता' आदि महत्वपूर्ण है। 'यह मेरी मातृभूमि है ' में आत्मकथात्मक शैली का अद्‌भुत सौंदर्य दर्शनीय है। व्यक्ति–सत्य का पूर्ण आभास इस कहानी में पायी जाती है–

आत्म विश्लेषणात्मक शैली : प्रेमचंद की लिखी 'ब्रह्म का स्वांग ' कहानी में आत्म विश्लेषणात्मक शैली का सुन्दर समन्वय देखने को मिलता है। इसमें कालबद्ध जीवन की घटनाओं का विश्लेषण होता है[7]।

''स्वामी ने सिद्धान्त और व्यवहार में अन्तर स्पष्ट करते हुए व्यावहारिक ज्ञान की शिक्षा यों दी है –– ''.....जब उसकी आज्ञा के बिना एक पत्ता भी नहीं हिल सकता, तो इतनी महान, सामाजिक व्यवस्था उसकी आज्ञा के बिना क्यों कर भंग हो सकती है? जब वह स्वयं सर्वव्यापी है तो वह अपने ही को ऐसे–ऐसे घृणोत्पादक अवस्थाओं में क्यों रखता है?''

नाटकीय शैली :कथावस्तु को आकर्षक तथा रोचक बनाने के लिए प्रेमचंद ने नाटकीय शैली का भी प्रयोग किया है। प्रहसन के रूप में लिखी गई 'दुराशा ' कहानी में इसका सफल उदाहरण देखने को मिलता है।

भावात्मक शैली : प्रेमचंद की कई कहानियों में भावात्मक शैली का सुन्दर प्रयोग हुआ है। 'ईदगाह', 'मुक्तिमार्ग ' आदि कहानियाँ भावात्मक शैली की सफल अभिव्यक्ति देती है। 'ईदगाह ' के हामिद के मुँह से निकलने वाले शब्दों में तो उसके कठोर जीवन अनुभवों की ओर भावात्मक अभिव्यक्ति दी है[8]।

संवादात्मक शैली : प्रेमचंद की कहानियों में प्रयुक्त सबसे प्रभावी एवं आकर्षक शैली संवादात्मक शैली ही है। संवादों की सफलता ही उनकी कहानियों की विशिष्टता का आधार है।

पत्रात्मक शैली : प्रेमचंद ने अपनी कुछ कहानियों में पत्रात्मक शैली को भी अपनाया है। 'कुसुम', 'विनोद', 'आहुति', 'दो सखियाँ ' आदि में इसके उत्तम नमूने दर्शनीय है। 'दो सखियाँ ' नामक कहानी में पात्रोचित भावनाओं तथा रहस्यों के उद्‌घाटन के लिए दो सखियों के आपसी पत्र व्यवहार को ही आधार बनाया है। पूरी कहानी इस प्रकार के आपसी पत्रों के जरिये आगे बढ़ती है।

डायरी शैली : यह शैली एक तरह से आत्मकथा लेखन के अन्तर्गत आती है। एक अन्तर्मुखी व्यक्तित्व की पहचान इस प्रकार की शैलियों की विशेषता है। 'पंडित मोटेराम की डायरी ' कहानी इसका एक सफल उदाहरण है। इस लम्बी कहानी में पंडित मोटेराम ने अपने जीवन की कथा, संवादों, आत्मकथनों और वर्णनों द्वारा अभिव्यक्त किया है[9]।

मनोविश्लेषणात्मक शैली : प्रेमचंद की कहानी–कला में प्रयुक्त वैविध्यपूर्ण शैलियों में मनोविश्लेषणात्मक प्रणाली का भी सुन्दर प्रयोग

दर्शनीय है। 'कफन', 'मनोवृत्ति', "नशा', 'बडे भाई साहब ' आदि कहानियों में इस शैली के सुन्दर नमूने मिलते हैं। "मनोवृत्ति ' कहानी के एक उदाहरण इस प्रकार है। प्रातःकाल गाँधी पार्क में नींद में सोयी एक युवती को देखकर वहाँ आए लोगों के विभिन्न प्रकार के संदेहों का मनोविश्लेषमात्मक ढंग से प्रेमचंद ने चित्रित किया है।

.....''है किसी भले घर की लड़की।''

''वेश्या है साहब, आप इतना भी नहीं समझते।''

''वेश्या इतनी फूहड़ नहीं होती।''

''और भले घर की लड़कियाँ फूहड़ होती है?''

''नयी आजादी है, नया नशा है।''

यहाँ संवाद द्वारा समाज की विभिन्न विचारधाराओं की ओर संकेत किया गया है। एक छोटी सी घटना का मनोविश्लेषणात्मक ढंग से विवेचन किया गया है।

जयशंकर प्रसाद की कहानियों में प्रयुक्त विभिन्न शैलियाँ

जयशंकर प्रसाद ने अपनी कहानियों में विभिन्न शैलियों को न केवल प्रमुखता दी है वरन् उसे अपनी कहानियों की सफलता के आधारभूत तत्व के रूप में स्वीकार किया है। उन्होंने अपनी कहानियों में मनोविश्लेषणात्मक दृष्टि को ही प्रमुखता दी है। फिर भी मुख्य रूप से प्रसादजी की कहानियों में वर्णनात्मक शैली, आत्म कथात्मक शैली, संवादात्मक शैली, पत्रात्मक शैली, काव्यात्मक शैली, स्मृतिपरक शैली, मनोविश्लेषणात्मक शैली और सूक्तिपरक शैली का सुन्दर समन्वय पायी जाती है[10]।

आत्मकथात्मक शैली: आत्मकथात्मक शैली का भी सुन्दर समन्वय भी प्रसादजी की कहानी कला में पायी जाती है। अधिकतर प्रथम पुरुष में लिखी गई इस प्रकार की कहानियों में केवल एक ही पात्र–विशेष पर बल देता है। 'चित्रवाले पत्थर'कहानी इसका एक उत्तम नमूना प्रस्तुत करती है। ''मैं राजमहल का कर्मचारी था। उन दिनों मुझे विन्ध्य शैल–माला के एक उजाड़ स्थान में सरकारी काम से जाना पड़ा। भयानक वन–खंड के बीच, पहाड़ी से हटकर एक छोटी–सी डाक बँगलिया थी। मैं उसी में ठहरा था। वही की एक पहाड़ी में एक प्रकार का रंगीन पत्थर निकला था।

नाटकीय शैली: प्रसादजी के कहानी लेखन में सबसे प्रभावी एवं सफल शैली नाटकीय कथन शैली है। अनेक स्थानों पर इस शैली का सुन्दर प्रयोग कर प्रसादजी ने अपनी कहानियों को अलंकृत किया है। पाठकों के मन में उत्सुकता एवं रोचकता पैदा करने में यह शैली सबसे ज्यादा सक्षम है। 'परिवर्तन ' कहानी का एक उदाहरण इस प्रकार है–

उसने चलते–चलते पूछा – ''भला, तुझे दुल्हा कहाँ से मिल गया?''

''ओहो, तब आप क्या जानें कि हम लोगों के बयाह की बात पक्की हुए आठ बरस हो गये? नीलधर चला गया था, लखनऊ कमाने, और मैंने भी हर साल यही नौकरी करके कुछ–न–कुछ यही पाँच सौ रुपये बचा लिए हैं। अब वह भी एक हजार और गहने लेकर परसों पहुँच जायगा। फिर हम लोग ऊँचे पहाड़ पर अपने गाँव में चले जायेंगे। वहीं हम लोगों का घर बसेगा।.....1

संवादात्मक शैली: इस प्रकार की कहानियों में संवाद या वार्तालाप द्वारा ही पूरी कहानी बुनी गई है। कथानक का क्रमिक विकास, पात्रों के चरित्र चित्रण, वातावरण की अभिव्यक्ति आदि कहानीगत

सभी तत्वों के सफलतापूर्वक आयोजन के लिए संवादात्मक शैली उपयुक्त एवं प्रभावी होती है। वास्तव में प्रसादजी की संवादात्मक शैली की कहानियाँ ज्यादा सफल मानी जाती हैं[11]। संवाद–योजना उनके कहानी शिल्प का अभिन्न अंग ही है। 'अघोरी का मोह', 'आकाशदीप', 'मधुआ', 'पुरस्कार' आदि कई कहानियों में इसका सटीक प्रयोग कहानी को प्रेषणीय बनाने में सहायक निकला है। 'आकाश–दीप ' का एक उदाहरण इस प्रकार है––

''तुम्हें इन लोगों ने बंदी क्यों बनाया?''

''वणिक् मणिभद्र की पाप–वासना ने।''

''तुम्हारा घर कहाँ है?''

''जान्हवी के तट पर। चंपा नगरी की एक क्षत्रिय बालिका हूँ। पिता इसी मणिभद्र के यहाँ प्रहरी का काम करते थे। माता का देहावसान हो जाने पर मैं भी

काव्यात्मक शैली: प्रसादजी की कई कहानियों में काव्यात्मक शैली का प्रयोग हुआ है जिसमें उनका कवि व्यक्तित्व जाग उठता है। भाव–प्रधान कहानियों में काव्यात्मकता को ही उन्होंने प्रमुखता दी है। इस प्रकार की शैलियों में अनेक स्थानों पर वर्णनों तथा संवादों के बीच गीतों एवं काव्य पंक्तियों का समावेश पायी जाती हैं। मुख्य रूप से संस्कृत, उर्दु, जभाषा आदि के गीतों का ही प्रयोग कहानी को गतिशील बनाने के लिए किया गया है। 'ग्राम गीत ' कहानी में कथ्य पक्ष को प्रभावी बनाने के लिए बीच–बीच में जभाषा में रचित एक प्रेम गीत का प्रयोग किया गया है[12]।

''पगली रोहिणी गा उठी।

''ढीठ! बिसारे बिसरत नाहीं

कैसे बँसू जाय बनवाँ मों,

बनजोरी बसे हो.....''1

पगली रोहिणी के हृदय की मार्मिक व्यथा की सफल अभिव्यक्ति के लिए उपर्युक्त काव्य पंक्तियों का प्रयोग किया है।

स्मृति परक शैली: इस प्रकार की कहानियों में पात्र अपनी स्मृति के सहारे अतीत में घटित घटनाओं को व्यक्त करते हैं। कहानी में कलात्मकता से युक्त आकर्षणीयता पैदा करने में स्मृतिपरक शैली सहायक सिद्ध होती है। 'सन्देह', 'मदन–मृणालिनी',

'ग्राम–गीत' आदि कहानियों में यह शैली पायी जाती है। 'सन्देह ' कहानी में मोहन बाबू के संवाद में उनकी स्मृतियों की अभिव्यक्ति होती है।

''सचमुच मैं देख रहा था। गंगा की घोर धारा पर बजरा फिसल रहा था। नक्षत्र बिखर रहे थे। और एक सुन्दरी युवती मेरा आश्रय खोज रही थी। अपनी सब लज्जा और अपमान लेकर वह दुर्वह सन्देह–भार से पीड़ित स्त्री जब कहती थी कि आप देखते हैं न', तब वह मानो मुझसे प्रार्थना करती थी कि कुछ मत देखो, मेरा व्यंग्य – अपहास देखने की वस्तु नहीं।''1

यहाँ पात्र की मानसिक भावनाओं को स्मृति के सहारे वाणी दी गई है। चरित्रांकन की दृष्टि से यह शैली सफल मानी जाती है।

मनोविश्लेषणात्मक शैली: कहानी की सफल शैलियों में से एक है मनोविश्लेषणात्मक शैली। इसका सफल प्रयोग प्रसादजी ने अपनी कई कहानियों में किया है। इसका सौन्दर्य पूरी कहानी को आकर्षक बना देती है। 'आँधी ' कहानी में भिक्षु और लैला के बीच के संवाद में भिक्षु की मनःस्थितियों का मनोविश्लेषणात्मक चित्रण दर्शनीय है।

''तो आप ब्याह करेंगे?''

''क्यों नहीं, वही करने तो जा रहा हूँ।''

''देखता हूँ, स्त्रियों पर आपको पूर्ण विश्वास है।''

''अविश्वास करने का कारण ही क्या है? इतिहास में, आख्यायिकाओं में कुछ स्त्रियों और पुरुषों का दुष्ट–चरित्र पढ़कर मुझे अपनी भावी सहधर्मिणी परअविश्वास कर लेने का कोई अधिकार नहीं? प्रत्येक व्यक्ति को अपनी परीक्षा देनीचाहिए।.....

प्रेमचंद और जयशंकर प्रसाद की कहानियों के कथ्य परक अन्तर

प्रेमचंद और जयशंकर प्रसाद दोनों समसामयिक रचनाकार होते थे तो भी कहानी के क्षेत्र में विभिन्न प्रवृत्तियों को अपनाया है। कथ्य और शिल्प में ही नहीं, दोनों की रचनात्मक दृष्टि में भी भिन्नताएँ मौजूद है। प्रेमचंद की दृष्टि आदर्शोन्मुख यथार्थवाद पर टिकी रहती है तो उससे सर्वथा भिन्न होकर प्रसादजी भावमूलक यथार्थवाद की ओर उन्मुख थे। प्रेमचंद मानव जीवन से अधिक परिचित थे, इसलिए उनकी कहानियों में मानव जीवन के सर्वांगीण विकास की गाथा अभिव्यक्त हुई है। मानव जीवन से संबन्धित ऐसा कोई भी तत्व नहीं है जो उनकी कलम से वंचित रहा हो। विषय वैविध्य की दृष्टि से उनकी कहानियाँ बेजोड़ है। लेकिन प्रसादजी भावात्मक कहानियों के प्रणेता होने के कारण उनकी कहानियों में व्यक्तिमन की सूक्ष्मतम भावनाओं का ही चित्रण अधिक हुआ है। क्योंकि स्वच्छन्दतावादी प्रवृत्तियों की ओर उन्हें विशेष रुचि रही है। इसलिए सौन्दर्य और प्रेम की प्रधानता उनकी कहानियों में अवश्य पायी जाती है। इन दोनों रचनाकारों की कहानियों की कथ्यपरक विशेषताओं पर आगे विचार करेंगे।

प्रेमचंद की कहानियों की कथ्यपरक विशेषताएँ

आधुनिक हिन्दी कहानियों के पितामह प्रेमचंद की कहानियों में कथ्य और शिल्प के क्षेत्र में जितनी विविधता पायी जाती है, उतनी अन्यत्र दुर्लभ है। उन्होंने कहानी–साहित्य को अपने समय के मानव–जीवन की कटु वास्तविकताओं की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम मानकर उससे संबन्धित विविध पहलुओं को अपनी कहानियों के अन्तर्गत चित्रित किया है। इसलिए उनकी कहानियों के कथ्यपक्ष में वास्तविकता को ही प्रमुखता दी गई है।

उनकी आरंभकालीन कहानियों में भारतीय मध्यकालीन जन–जीवन का वास्तविक चित्रण मिलता है। लेकिन उनकी मध्यवर्गी कहानियों में मानव जीवन की उदात्त भावनाओं की विभिन्न प्रवृत्तियों का सशक्त चित्रण मिलता है। अंतिम दौर की कहानियों में यथार्थ को अधिक संवेदनशील एवं मनोवैज्ञानिक विश्लेषण दृष्टि से देखने–परखने की प्रवृत्ति दर्शनीय है। 'प्रेम–पीयूष ' की भूमिका में प्रेमचंद बताते हैं ''वर्तमान आख्यायिका मनोवैज्ञानिक विश्लेषण और जीवन के यथार्थ स्वाभाविक चित्रण को अपना ध्येय समझती है। उसमें कल्पना की मात्रा कम, अनुभूतियों की मात्रा अधिक होती है, बल्कि अनुभूतियाँ ही रचनाशील भावना से अनुरंजित होकर कहानी बन जाती है।''1

जयशंकर प्रसाद की कहानियों की कथ्यपरक विशेषताएँ

जयशंकर प्रसाद की कहानियाँ एक भावुक कवि तथा विश्लेषण चतुर नाट्य–शिल्पी की कहानियाँ हैं। इसलिए इन कहानियों में घटना उतनी महत्वपूर्ण नहीं होती, जितना चरित्र और चरित्र की भावनाएँ प्रमुख होती हैं। प्रसादजी के मन में अतीत और इतिहास के प्रति जो विशेष लगाव है, उसका स्पष्ट प्रतिफलन उनकी कहानी कला में विद्यमान है। इसका समर्थन करते हुए एक लेखक बताते हैं.....''प्रसाद मुख्यतः अतीत और इतिहास

में जाते हैं, कल्पना का रंग चढ़ाते हैं और भावुकता समन्वित दृष्टि को अपनाते हैं।''

कहने का मतलब यह है कि उनकी कहानियाँ ज्यादातर भावलोक में विचरण करने वाली होती हैं। उनकी कहानियों के कथ्यपक्ष में भारत के गौरवान्वित अतीत को ही प्रथम स्थान दिया गया है। बाद में जीवन के वैयक्तिक पहलुओं को उजागर करने की कोशिश भी दर्शनीय है। लेकिन मानवतावाद को वह साथ लेकर ही चलते थे। इस के संबन्ध में ''प्रसाद की कहानियाँ रू प्रवृत्तिमूलक अध्ययन'' में लेखक बताते हैं ।

प्रभाव की दृष्टि से प्रेमचंद और जयशंकर प्रसाद की कहानियों की तुलना

मुंशी प्रेमचंद और जयशंकर प्रसाद हिन्दी कहानी साहित्य के विकास– युगीन कहानीकार हैं। दोनों समसामयिक रचनाकार होते थे तो भी दोनों का रचना संसार अलग–अलग हैं। प्रेमचंद के लिए कहानी–साहित्य मूलकेन्द्रित विधा थी। लेकिन प्रसाद के लिए कहानी मूलकेन्द्रित विधा नहीं थी। क्योंकि प्रसाद सबसे पहले एक भावुक कवि एवं मंचे हुए नाटककार है। इन दोनों के बाद ही उनका कहानीकार व्यक्तित्व हमारे सामने आते हैं। प्रेमचंद एक ही समय साहित्यिक जगत में उपन्यास और कहानी सम्राट नाम से जाने जाते थे। उपन्यास हो या कहानी हो, दोनों का रचनात्मक स्तर एक ही है। क्योंकि ये दोनों विधाओं में कथा तत्व को ही प्रमुखता देते हैं।

प्रेमचंदीय कहानियों में अन्य विधायी प्रभाव

अन्य विधायी प्रभाव की दृष्टि से देखने पर प्रेमचंद की कहानियों में प्रयुक्तसंवाद–योजना में उनके उपन्यासकार व्यक्तित्व का स्पष्ट प्रभाव है। इन दोनों विधाओं में रचना शिल्प का अविभाज्य अंग है संवाद–योजना। रचना काल की दृष्टि से उनकी उर्दु में लिखी कहानियाँ पहले प्रकाशित हो चुकी हैं। लेकिन हिन्दी में लिखी कहानियाँ सन् 1910 के बाद ही प्रकाशन में आयी हैं।

जयशंकर प्रसाद की कहानियों में अन्य विधायी प्रभाव

जैसा कि सूचित किया गया है कि प्रसाद जी एक भावुक कवि एवं कुशल नाटककार होने के कारण उनकी कहानियों की पृष्ठभूमि काव्य की परिष्कृत भावनाओं एवं नाटक की कल्पना लोक में विचारण करती हैं। उनकी कहानियों में प्रयुक्त संवाद–योजना में भी उक्त दोनों व्यक्तित्वों का स्पष्ट प्रभाव है। काव्य एवं नाटक में भी संवाद का महत्व है तो भी उनकी कहानियों में प्रयुक्त संवाद योजना में नाटकों का प्रभाव सबसे ज्यादा है। प्रसाद–साहित्य पर काल क्रमानुसार विचार करने पर पता चलते हैं कि कहानी लेखन में आने से पूर्व ही उन्होंने काव्य रचना शुरू की थी। उनका पहला काव्य संग्रह चित्राधार सन् 1907 में प्रकाशित हो गया।

उपसंहार

प्रेमचंद और जयशंकर प्रसाद की कहानियों में प्रयुक्त संवाद योजना मेंकाफी भिन्नताएँ मौजूद हैं। भाषा परक दृष्टि से विचार करने पर प्रेमचंद ने यथार्थमूलक जन सामान्य की भाषा में प्रयुक्त संवाद–योजना पर बल दिया है तो प्रसादजी की भाषा भावानुकूल, काव्यात्मक एवं प्रतीकात्मक शब्दावलियों से युक्त आभिजात्य संस्कार की भाषा है। दोनों की कहानियों में प्रयुक्त संवादों की कथन शैली में भी भिन्नताएँ हैं। प्रेमचंद ने कहानी–साहित्य में प्रचलित सभी शैलियों का सफलतापूर्वक नियोजन, अपनी कहानियों में किया है। जीवनानुभवों की तर्ज पर नींव डाली उनके संवाद, पात्रों में जान फूँक देते हैं। लेकिन प्रसादजी ने मुख्य रूप से मनोविश्लेषणात्मक दृष्टि को ही प्रमुखता दी है। जिसके कारण उनकी कहानियों में व्यक्ति मन की सूक्ष्मतम भावनाओं का

सशक्त चित्रण हुआ है। कथ्यपरक दृष्टि से विचार करने पर प्रेमचंद की कहानियाँ आम–आदमी के आस–पास ही चक्कर काटती रहती हैं। अपने युग की समस्त समस्याओं को साहित्य में संवारने में उनके

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. अश्क की सर्व श्रेष्ठ कहानियाँ उपेन्द्रनाथ अश्क नीलाभ प्रकाशन, इलाहाबाद प्र. सं–1960
2. अज्ञेय की कहानियाँ–1 अज्ञेय सरस्वती प्रेस, बनारस प्र.सं–1954
3. आप क्या कर करे हैं? भैरब प्रसाद गुप्त धारा प्रकाशन, इलाहाबाद प्र.सं–1983
4. इंसान पैदा हुआ रांगेय राघव किताब महल प्राइजेट लिमिटेड इलाहाबाद
5. वकीस कहानियाँ रायकृष्णदास वाचस्पती पाठक भारती भण्डार, इलाहाबाद नौगाँ सं – विसं–2018
6. इक्यावन श्रेष्ठ कहानियाँ मुंशी प्रेमचंद दिनमान प्रकाशन, दिल्ली–6 प्र.सं–1987
7. उसने कहा था और अन्य कहानियाँ (संपादक) डॉ. मनोहरलाल विकास पेयर जैक्स, दिल्ली–10031 प्र.सं–1991
8. एक छोड़ एक रांगेय राघव आत्माराम एण्ड सन्ज, दिल्ली–6 प्र.सं– 1963
9. कल्लोल विश्वभर नाथ शर्मा, कौशिक विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा प्र.सं–1986
10. काले साहब उपेन्द्रनाथ अश्क नीलाभ प्रकाशन गृह, इलाहाबाद–1 प्र.सं–1950
11. कोई शुरुआत गंगाप्रसाद विमल राजकमल प्रकाशन प्रा.लि., दिल्ली–6 प्र. सं–1973
12- गुप्तधन भाग–1 मुंशी प्रेमचंद साहि त्यागार, जयपुर प्र.सं 1995